The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 1 | January 2024
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

वृद्धावस्था की चुनौतियाँ, एक समाजशास्त्रीय अध्ययन : कोरबा जिले के विशेष संदर्भ में

डॉ0 विमला सिंह

सहायक प्राध्यापक

कमला नेहरू महाविद्यालय कोरबा (छ.ग.)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :
बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, आधुनिक युग, सामाजिक सुरक्षा

ABSTRACT

आज के इस भौतिकवादी आधुनिक युग में जहां युवा पीढ़ी अपने रोजगार एवं व्यवसाय की आपाधापी में व्यस्त है, वहीं इनमें समय सामंजस्य की समस्या को भी जन्म दिया है। ऐसी स्थिति में परिवार के बड़े–बूढ़ों के प्रति ये अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन यदि उचित ढंग से नहीं कर पाते तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। परन्तु अक्सर यह भी देखा जाता है कि सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों के पतन ने वृद्धों की समस्याओं को बढ़ाने में सर्वाधिक योगदान दिया है। भारतीय समाज की परम्पराओं एवं इसके सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों के कारण वृद्धों का बड़ा आदर होता था। संयुक्त परिवार प्रणाली बुजुर्गो को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती थी तथा उनकी पूरी देखभाल, करती थी, वे परिवार के आधार स्तम्भ थे तथा निर्णय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे, औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं सामाजिक गतिशीलता के कारण उत्पन्न सामाजिक मूल्यों सामाजिक संरचना एवं अर्थव्यवस्था एवं मूल्य वृद्धि ने परिवार के सदस्यों को वृद्धों के प्रति अपने दायित्व निर्वहन में अयोग्य सा बना दिया है।

वर्तमान भारत में वृद्धावस्था की चुनौतियाँ एक प्रमुख समस्या बन गयी है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में वृद्धावस्था की स्थिति को प्राप्त करता है, जैसे– बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था के बाद 60 वर्ष के बाद वृद्धावस्था का आना निश्चित होता है । इस अवस्था में मनुष्य शारीरिक, मानसिक व आर्थिक रूप से कमजोर हो जाता है तथा परिवार के सदस्यों पर उनकी निर्भरता बढ़ जाती है। ''आज के आधुनिक भौतिकवाद व व्यक्तिवादिता के प्रभाव बढ़ने के कारण वृद्धों की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। आज का युवा वृद्धों को एक बोझ के समान समझता है।'' [1]

यह विडंबना है कि आज भारत के सामाजिक व्यवस्था का यह स्वरूप बदलकर एंकाकी परिवार में बदलता है जहां एक तरफ संयुक्त परिवार टुट रहे है वही परिवार के वृद्ध व्यक्ति जो कल तक परिवार का कर्ता या मुखिया हुआ करता था अब उसे वृद्ध तथा अनुपयोगी समझने वाले लोगों की कमी नहीं है। जहां एक तरफ स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि के परिणाम स्वरूप उनकी औसत आयु में वृद्धि हुई है, पर उनकी समस्याएं भी कई गुना बढ़ गई है।

''वर्तमान समय में वृद्धो की समस्यायें जैसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक सभी स्तरों पर अत्यधिक गंभीर हो गयी है। भारत सरकार इन समस्यायों के प्रति जागरूक है तथा वह विभिन्न प्रकार के प्रावीडेन्ट फण्डों, पेन्शन, ग्रेच्युटी, बीमा योजनाओं इत्यादि के माध्यम से सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों को सुरक्षा प्रदान करने के साथ – साथ स्व–सेवायोजित व्यक्तियों को भी वृद्धावस्था में सुरक्षा का अनुभव कराने हेतु जीवन बीमा निगम के माध्यम से व्यक्तिगत एवं सामुहिक बीमा तथा जनता प्रावीडेन्ट फण्ड जैसे – योजनायें चल रही है। निराश्रित वृद्धों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न राज्यों की वृद्धावस्था पेन्शन योजनाओं के अधिन पेन्शन भी दी जा रही है।'' [2]

अध्ययन प्रविधि –

प्रस्तुत शोधपत्र ''वृद्धावस्था की चुनौतियाँ'' विषय से संबंधित संकलित तथ्यों के विश्लेषण पर आधरित है। प्रस्तुत शोधपत्र कोरबा जिले (छ.ग.) के बालको नगर में निवासरत परिवारों को अध्ययन के लिये लिया गया है। अध्ययन के लिये 120 परिवारों का चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के द्वारा लिया गया है। वृद्धावस्था की चुनौतियाँ अध्ययन के अंतर्गत वृद्धावस्था की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना, अध्ययन समस्या के कारण का अध्ययन, समस्या के उन्मुलन के सुझाव, सरकारी व गैर–सरकारी संगठनों के द्वारा किये गये कार्य का मूल्यांकन करना है।

उद्देश्य –

1. वृद्धावस्था की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना ।
2. वृद्धाओं की समस्याओं के कारणों का अध्ययन।
3. वृद्धावस्था की समस्याओं के उन्मुलन के सुझाव को प्रस्तुत करना।

4. सरकारी व गैर–सरकारी संगठनों के द्वारा किये कार्य का मूल्यांकन करना।

वृद्धावस्था में समस्याओं का सामना करना –

वृद्धावस्था में सभी व्यक्तियों के जीवन में की विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हो जाने की संभावना तो हमेशा ही रहती है और इन समस्याओं से ग्रसित हो जाने पर उनका जीवन व्यथित हो जाता है। ''सामान्यतया उन्हें बहुत–सी व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ ग्रसित कर लेती है, जिससे उन्हें अनेक परेशानियों से जूझना पड़ता है और उनके जीवन की बनी हुई आयु पर गंभीर संकट मंडराने लगते हैं।'' [3]

तालिका क्रमांक – 1

वृद्धावस्था में समस्याओं का सामना करना

क्रमांक	समस्याओं का सामना करना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	104	86.7
2.	नहीं	16	13.3
	कुल योग	120	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 86.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं को वृद्धावस्था में समस्याओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि शरीर तो साथ देता नही और न परिवार के लोगों द्वारा ज्यादा साथ नहीं देते है, जबकि 13.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि समस्या नहीं होती है क्योंकि बच्चे बहुत ज्यादा ध्यान देते है।

वृद्धावस्था में समस्याओं कारण –

आज के आधुनिक समय में पारिवारिक समस्याओं के अन्तर्गत वृद्धजनों से सम्बन्धित समस्याओं के प्रति समाजशास्त्रियों व समाज सेवा संस्थाओं का ध्यान अपनी ओर खिंच रहा है, क्योंकि जिनके पास अनुभव का भंडार भरा पड़ा है आज के युवा इससे लाभ उठाने के बजाय इनकी उपेक्षा करता है।

तालिका क्रमांक – 2

वृद्धावस्था में समस्याओं कारण

क्रमांक	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	धन का महत्व	22	18.3
2.	व्यक्तिगत स्वार्थ	15	12.5

3.	संयुक्त परिवार का विघटन	31	25.8
4.	आधुनिकीकरण व पश्चिमीकरण	10	8.4
5.	सामाजिक मूल्यों की कमी	24	20
6.	भौतिक सुख– सुविधाओं में वृद्वि	18	15
	कुल योग	120	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि संयुक्त परिवार का विघटन होने के कारण ही वृद्धावस्था में होने वाली समस्या अधिक हो जाती है क्योंकि परिवार में सदस्य संख्या कम होने के कारण घर के काम अधिक हो जाते हैं, 20 प्रतिशत उत्तरदाता, सामाजिक मूल्यों कमी का होना, 18.3 प्रतिशत उत्तरदाता धन के महत्व के कारण, 15 प्रतिशत भौतिक सुख–सुविधाओं में वृद्धि को, 12.5 प्रतिशत उत्तरदाता व्यक्तिव्यक्ति स्वार्थ को, 8.4 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिकीकरण व पश्चीमिकरण को वृद्धावस्था की समस्याओं का कारण मानते हैं।

वृद्धावस्था कि समस्याओं के उन्मुलन के सुझाव –

वृद्धावस्था कि समस्याओं के उन्मुलन में अनौपचारिक सहायता प्रणाली अधिक महत्वपूर्ण है।हालांकि भारत में विभिन्न नीतिगत ढाँचे और संवैधानिक और कानूनी प्राणधान मौजूद हैं, लेकिन जागरूकता की कमी के कारण वे लक्षित लाभार्थियों तक नहीं पहुँच पा रहे हैं।

आज के आधुनिक युग के युवा पीढ़ी को समझना चाहिए कि वृद्ध व्यक्ति समाज व परिवार के लिये संपत्ति की तरह है, बोझ तरह नहीं, और इस संपत्ति का लाभ उठाने का सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि उन्हें वृद्धाश्रमों में अलग–थलग करने के बजाय परिवार में आत्मसात किया जाए। अगर हम संतान अपने –पिता को साथ रखे, न केवल याथ रखे बल्कि परिवार के निर्णयों में सम्मिलित करे उनके मानसिक, शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक सहायता देश में एक भी वृद्धाश्रम की जरूरत नहीं पड़ेगी।

तालिका क्रमांक – 3

वृद्धावस्था कि समस्याओं के उन्मुलन के सुझाव

क्रमांक	समस्याओं के उन्मूलन के सुझाव	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	मूल्यों का विकास	34	28.4
2.	वृद्व व युवा पिढ़ी में समाजस्य का होना	26	21.6
3.	वृद्वों को अपनी संपत्ति पर अपना अधिकार रखना	21	17.5
4.	संयुक्त परिवार को प्रोत्साहन देना	20	16.7
5.	वृद्वों की निःशुल्क चिकित्सा	19	45.8

	सुविधा		
	कुल योग	120	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 28.4 प्रतिशत उत्तरदाता का मानना है कि अगर हमारे अंदर मूल्यों को विकास हो जाये तो वृद्धावस्था एक समस्या नहीं होगी, 21.6 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्ध व युवा पिढ़ी में सांमजस्य होना चाहिए, 17.5 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्धों का अपनी सम्पत्ति पर अपना अधिकार रखना, 16.7 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार को प्रोत्साहन देना, 15.8 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्धों की निःशुल्क चिकित्सा सुविधा को मानते है।

सरकारी व गैर सरकारी संगठनों के द्वारा किये कार्य का मूल्यांकन –

आज के वैश्वीकरण के युग में हमारे देश में वृद्धाओं के मुल्य को कम आंका जा रहा है। आज का युवा पिढ़ी एंकाकी परिवार बनाना चाहता है, वह अपने वृद्वों का हस्ताक्षेप बिल्कुल पसंद नहीं करते है। ये स्वतंत्र होकर जीना चाहते है वे भुल जाते हैं कि एक समय बाद वो भी वृद्ध होगें। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी युवा इसी तरह हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में भी हमें अपने बड़ो के प्रति सम्मान व संस्कारों को बनाए रखना है हमें धर्म से जुड़कर इस बात को समझना है कि इस धरती पर ईश्वर के रूप में हमारे साथ हमारे वृद्व ही हैं इनकी सेवा ईश्वर सेवा के समान हैं इस बात के लिए हमें सभी को जागरूक करना होगा।

आज राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, गैर सरकारी संगठनों व समाज कल्याण संस्थओं को मिलाकर कार्य करना हैं, तभी हम वृद्धावस्था की समस्याओं का समाधान किया जा सकता हैं। वृद्वाओं के अनुभव व ज्ञान को लेने के लिये संस्थाओं से जोड़ा जाना व वृद्धों के मान व सम्मान को बनाये रखना आवश्यक है।

एलिजाबेथ के विकेडन के अनुसार ''समाज कल्याण के अन्तर्गत ऐसी विधियाँ, कार्यक्रम, लाभ तथा सेवाएं आती है जो उन सामाजिक आवश्यकताओं को आश्वासन प्रदान कर तथा शक्तिशाली बनाती हैं जिन्हें जन–कल्याण तथा सामाजिक व्यवस्था के सुचारू कार्यान्वयन के लिए आधारभूत माना जाता है तथा वृद्धावस्था में सहयोग मिल सकें।''[4]

तालिका क्रमांक – 4

सरकारी व गैर सरकारी योजना से संतुष्टी

क्रमांक	संतुष्ट	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	59	49.2
2.	नहीं	61	50.8
	कुल योग	120	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 50.8 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी व गैर सरकारी योजना से संतुष्ट नही है इनके अनुसार सरकार को और अधिक प्रयास करना चाहिये था, जबकि 49.2 प्रतिशत उत्तरादाता संतुष्ट है।

आज विकासशील भारत में जहां वृद्वों का संख्या तेजी से बढ़ रही है तो वहीं दूसरी तरफ नगरीकरण, औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण ने बच्चों में माता–पिता से प्राचीन संस्कारों व रीति–रिवाजों से जुड़े रहने का संस्कार कम होते जा रहा है आज वृद्वों के सामने स्वास्थ्य पारिवारिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्यायें दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है ये उपेक्षा का शिकार होते जा रहे हैं आज युवा पिढ़ी को इन वृद्वों को समझना होगा कि यही वृद्व लोगों ने अपने जीवन का पुरा समय इनके देखभाल व परवरिश में लगाया था जिसके कारण आज युवा पिढ़ी एक सफल जीवन जी रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. अभिलाशा सैनी, भारतीय समाज संस्करण, विवेक प्रकाशन, पृ. – 323, सन 2018.
2. सिंह सुरेन्द्र एवं मिश्र पी.डी., समाज कार्य, न्यू रॉयल बुक कम्पनी लखनऊ, पृ.– 26, सन 2015.
3. दास फणि भूषण, वृद्धावस्था और स्वास्थ्य की समस्या, सस्ता साहित्य मण्डल, पृ. 18, सन 2021.
4. शर्मा कंचन लता, वृद्व महिलाओं की उपेक्षा, शोषण एवं समस्याएँ, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, पृ. – 150, सन 2009.